UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

47 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2022 ई.

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

प्रकाशक:
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:
बी–4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली–110016

शोधप्रभा-प्रकाशनपरामर्शदात्रीसमितिः

प्रो. केदारप्रसादपरोहा, दर्शनपीठप्रमुखः
प्रो. सविता शर्मा, आधुनिकविद्यापीठप्रमुखः
प्रो. सदनसिंहः, शिक्षाशास्त्रपीठप्रमुखः
प्रो. जयकान्तसिंहशर्मा, वेदवेदाङ्गपीठप्रमुखः
प्रो. शीतलाप्रसादशुक्लः, साहित्यसंस्कृतपीठप्रमुखः

निर्णायकमण्डलसदस्याः (अक्टूबरमासाङ्कः, 2022)

प्रो. राजेश्वरमिश्रः, मिश्रभवनम्, 271/27, न्यू शान्तिनगरम्, गली सं. 1, कुरुक्षेत्रम्–136119, हरियाणा
प्रो. अमिता-शर्मा, सी–105 स्वद अपार्टमेन्ट, प्लाटनं. 12 सेक्टर–6, द्वारका, नवदेहली– 110075
प्रो. कृष्णकान्तशर्मा, प्राच्यविद्याधर्मदर्शनसङ्कायः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी–221005, उ.प्र.
प्रो. रामकिशोरत्रिपाठी, अद्वैतवेदान्तविभागाध्यक्षः, सम्पूर्णानन्दसं.वि. विद्यालयः, वाराणसी–221002 उ.प्र.
प्रो. दामोदरशास्त्री, अध्यक्षः, संस्कृत-प्राकृतविभागः, जैनविश्वभारतीसंस्थानम्, लाडनूं–341306 नागौर, राजस्थानम्
प्रो. मनोजकुमारमिश्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, गङ्गानाथझापरिसरः, आजादपार्क, प्रयागराजः– 211001, उ.प्र.
प्रो. लक्ष्मीनिवासपाण्डेयः, निदेशकः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, के.जे.सोमैय्या-परिसरः, विद्याविहारः, मुम्बई
डॉ. कीर्तिकान्तशर्मा, 46-संगमविहारः, गलीसं. 10, नजफगढ़, नवदेहली– 110043

ISSN 0974 - 8946

47 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2022 ई.

© श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
वेबसाइटसङ्केतः – www.slbsrsv.ac.in
ई-मेलसङ्केतः – shodhaprabhalbs@gmail.com
दूरभाषसङ्केतः – 011-46060609, 46060502

मुद्रकः – डी.वी. प्रिन्टर्स, 97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली–110007

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. यास्कीयकाव्यालङ्कारसूत्रानुरोधेन संसृष्ट्यलङ्कारविषये वामनमतसमुच्छेदः -प्रो. भारतेन्दुपाण्डेयः 1-11

2. मम्मटाभिमतकाव्यलक्षणविमर्शः 12-15
-डॉ. टी. महेन्द्रः

3. भारतीयज्ञानपरम्परायां वाक्यार्थविचारः 16-26
-डॉ. मृगांकमलासी

4. चम्बानगरस्थस्य लक्ष्मीनारायणमन्दिरस्य वास्तुदृष्ट्या अध्ययनम् 27-35
-डॉ. देशबन्धुः
-श्रीसन्तोषकुमारः

5. उपनिषद्दृष्ट्या सङ्घटनस्य आवश्यकता 36-40
-डॉ. नरेन्द्रकुमारपाण्डेयः

6. शब्दब्रह्मणः स्वरूपविमर्शः 41-46
-श्रीशिवदत्तत्रिपाठी

7. जीवातौ तिङन्तपदव्युत्पादने मल्लिनाथस्य चिन्तनविशेषः 47-50
-डॉ. रजनी

हिन्दी विभाग

8. छन्दःसमीक्षा में निरूपित अवष्टम्भ-व्यवस्था 51-64
-प्रो. मीरा द्विवेदी

9. आचार्य चरक के अभिमत में सुखायु 65-71
-डॉ दीप्ति वाजपेयी

10. 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य का ज्योतिषशास्त्रीय वैशिष्ट्य 72-83
-प्रो. ब्रजेश कुमार पाण्डेय
-डॉ. नीरज कुमार जोशी

UGC-CARE Listed
अक्टूबर-दिसम्बर, 2022

शोधप्रभा
वर्ष : 47, चतुर्थोऽङ्कः

'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य का ज्योतिषशास्त्रीय वैशिष्ट्य

प्रो. ब्रजेश कुमार पाण्डेय*

डॉ. नीरज कुमार जोशी**

प्रस्तावना:

नैषधीयचरितम् महाकाव्य को बृहत्त्रयी का अन्तिम महत्त्वपूर्ण महाकाव्य कहा गया है। श्रीहर्ष द्वारा प्रणीत द्वाविंशतिसर्गात्मक की एक विशाल आलंकारिक शैली का महाकाव्य है। महाकवि ने अपने इस महाकाव्य को **'शृंगारामृतशीतगुः'** अर्थात् शृंगार रूपी अमृत बरसाने वाला चन्द्रमा कहा है। महाकाव्य विविध सिद्धान्तों से युक्त है। उनमें भी ज्योतिषशास्त्रीय सिद्धान्तों का विवेचन कवि ने अनेक स्थानों तथा विभिन्न प्रसंगों में किया गया है।

मुख्यशब्दः- बृहत्त्रयी, ज्योतिषशास्त्रीयसिद्धान्त, महाकाव्य, सामुद्रिकसिद्धान्त, शकुनशास्त्र, ज्योतिर्विद्, शरीराकृति, समुद्राचार्य, प्रतिबिम्ब, काव्यस्त्रष्टा।

नैषधीयचरितम् महाकाव्य का ज्योतिषशास्त्रीय वैशिष्ट्य

नैषधीयचरितम् महाकाव्य में श्रीहर्ष ने नल व दमयन्ती सौन्दर्य आदि विविध गुणों का वर्णन विविध अलंकारों का प्रयोग करते हुए किया है, साथ ही विभिन्न स्थानों पर सूर्यादि ग्रहों के स्वरूप की चर्चा तथा उनके शारीरिक अंगों की शोभा को सामुद्रिक सिद्धान्तानुगत करते हुए उनके साथ घटित होने वाली अनेकानेक शुभाशुभ घटनाओं को शकुनशास्त्रानुगत करते हुए अपने ज्योतिषशास्त्रीय ज्ञान की पुष्टता को प्रदर्शित किया है। नैषधीयचरितम् महाकाव्य के विभिन्न टीकाकारों ने महाकवि श्रीहर्ष का अनुसरण करते हुए प्रथम पद्य के साथ ज्योतिषशास्त्र का संबंध स्थापित किया है। यहाँ महाकाव्य के प्रथम पद्य में कथानायक राजा नल की गुण गरिमा को निम्नलिखित रूप में प्रकाशित किया है-

निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां
तथाद्रियन्ते न बुधाः सुधामपि।

---

* विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067

** सहायकाचार्य, मानविकी विद्याशाखा, संस्कृत विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।

नल: सितच्छत्रितकीर्तिमण्डल:
स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वल:॥[1]

यहाँ **'महसा राशि'** कहते हुए ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कथानायक नल को सूर्य सदृश बताया है। भद्रबाहुसंहिता नामक ग्रन्थ में लिखा है कि ज्योतिषशास्त्र में परिवेशों के द्वारा शुभाशुभ अवगत करने की परम्परा निमत्तशास्त्र के अन्तर्गत है। परिवेशों का विचार ऋग्वेद में आया है। सूर्य अथवा चन्द्रमा की किरण पर्वत के ऊपर प्रतिबिम्बित और पवन के द्वारा मंडलाकार होकर थोड़े से मेघ वाले आकाश में अनेक रंग और आकार की दिखाई पड़ती है, वर्षा ऋतु में सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर एक गोलाकार अथवा अन्य किसी आकार में एक मंडल-सा बनता है, इसी को परिवेश कहा जाता है। भद्रबाहुसंहिता नामक ग्रन्थ में परिवेश विचार की चर्चा बृहद् रूप में है। इसी सर्ग में महाकवि श्रीहर्ष ने श्लेष व उपमा अलंकार के माध्यम से ग्रह संयोगों की चर्चा करते हुए राजा नल की कवि बुधजन सेवितता का वर्णन शुक्र, बुध ग्रहों के साथ सूर्य के संयोग सदृश निम्नलिखित रूप से निर्दिष्ट किया है। यहाँ कवि की प्रतिभा कौशल ने सूर्य, बुध, शुक्र की युति के द्वारा कथानायक को उन्तिनलि के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा दिया-

अजस्त्रमभ्यासमुपेयुषा समं मुदैव देव: कविना बुधेन च।
दधौ पटीयान् समयं नयन्नयं दिनेश्वरश्रीरुदयं दिने दिने॥[2]

ज्योतिषशास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार मान्यता है कि पूर्व का स्वामी भानु (सूर्य) अग्निकोण (दक्षिण-पूर्व) का स्वामी शुक्र, दक्षिण का स्वामी मग्ल, नैऋत्यकोण (पश्चिम दक्षिण) का राहु, पश्चिम का स्वामी शनि, वायव्य (पश्चिमोत्तर) का स्वामी चन्द्र, उत्तर का स्वामी बुध, ईशान (पूर्वोत्तर) का स्वामी बृहस्पति, ये अष्ट दिशा स्वामी ग्रह है-**'भानु: शुक्रक्ष्मापुत्र: सैंहिकेय: शनि: शशी। सौम्यस्त्रिदशमन्त्री च प्राच्यादिदिगधीश्वरा:'** इनका उपयोग यात्रा, प्रश्न, जातक, चोरी, सूतिकाग्रहादि के निश्चय में किया जाता है। इस प्रकार नित्य सूर्योदय के समय सूर्य को बुध-शुक्र का सामीप्य मिलता है। ज्योतिषशास्त्रीय ग्रन्थों में सूर्य अधिष्ठित राशि की पूर्व राशि या परराशि में बुध और शुक्र की स्थिति को इस प्रकार कहा है-

प्राकृतविमिश्रसप्तितीक्ष्णयोगान्तघोरपापाख्या:।
सप्त पाराशरतन्त्रे नक्षत्रै: कीर्तिता गतय:॥
प्राकृतसंज्ञा वायव्ययाम्यपैतामहानि बहुलाश्च।
मिश्रा गति: प्रतिष्ठा राशिशिवपितृभुजगदेवानि॥

1. नैषधीयचरितम्, 1/1
2. नैषधीयचरितम्, 1/17

सिप्तायां पुष्यः पुनर्वसुः फाल्गुनीद्वयेश्चेति।
तीक्ष्णायां भद्रपदाद्वयं सशाक्राश्वयुक् पौष्णम्॥
योगान्तिकेति मूलं द्वे चाषाढे गति सुतस्येन्दोः।
घोरा श्रवणस्त्वाष्ट्रं वसुदैवं वारुणं चैव॥
पापाख्या वादित्र मैत्रं शक्राग्निदैवतं चेति।

इस प्रकार ज्योतिर्विदों की मान्यता के अनुसार बुध व शुक्र गति भिन्नता के कारण प्रायः सूर्य के समीप में ही विचरण करते हैं। अर्थात् बुध तथा शुक्र सूर्य के 90 अंश (डिग्री) में ही रहते हैं। फलित ज्योतिष का नियम है जिस जातक के जन्म काल के समय बुध तथा शुक्र एक साथ बैठे हों वह जातक नीतिशास्त्र को जानने वाला, अनेक विद्याओं को जानने वाला, धनवान्, सुन्दर वचन बोलने वाला, वेद वेदांग को जानने वाला, कुल में प्रतापी, श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला, श्रेष्ठ आचरण वाला होता है-

बुधभार्गवयोर्योगे नयज्ञो बहुशिल्पवित्।
धनी सुवाक्यो वेदज्ञो गीतज्ञो हास्यलालसः॥[1]

इसी ज्योतिषशास्त्रीय सिद्धान्त का लक्षण राजा नल के जीवन में भी द्रष्टव्य है। कवि ने वियोग के अवसर पर चन्द्रमा का (सूर्य+चन्द्रयुति द्वारा) शैत्य समाप्त कर उसे सूर्य सदृश ही बना दिया है-

अयोगभाजोऽपि नृपस्य पश्यता तदेव साक्षादमृतांऽशुमाननम्।
पिकेन रोषाऽरुणचक्षुषा मुहुः कुहूरुताऽऽहूय तचन्द्रवैरिणी॥[2]

क्योंकि कथानायिका दमयन्ती को भी ऊष्ण किरणों से जला रहा है। काव्यस्रष्टा द्वारा यात्रा विषयक वृत्तान्त दिये जाने से यह सिद्ध किया गया है कि कोई भी व्यक्ति सूर्याभिमुख यात्रा न करें, क्योंकि यह शास्त्र विरूद्ध है-

शस्ता न हंसाऽभिमुखी पुनस्ते यात्रेति ताभिश्छलहस्यमाना।
साह स्म नैवाऽशकुनीभवेन्मे भाविप्रियावेदक एव हंसः॥[3]

ज्योतिषशास्त्रीय ग्रन्थों में सूर्याभिमुख यात्रा को प्रशस्त नहीं माना है-

दिगीशाः सूर्यशुक्रारराह्वर्केन्दुज्ञसूरयः।
दिगीश्वरे ललाटस्थे यातुर्न पुनरागमः॥
दिशामधीशा रविशुक्रभौमतमोयमेन्द्विन्द्वजसूरयः स्युः।
ललाटगेनप्रवसैहिगशे गन्तव्यमस्मिन् खलु कण्ठकस्थै॥[4]

1. मानसागरी पृ०-139
2. नैषधीयचरितम्, 1/100
3. नैषधीयचरितम्, 3/9
4. बृहद्दैवज्ञरंजन पृ०-282

कभी-कभी चन्द्र सदृश नायक की अभिलाषा नायिका द्वारा प्रस्तुत की गयी है-

मनस्तु यं नोज्झति जातु यातु मनोरथः कण्ठपथं कथं सः।
का नाम बाला द्विजराजपाणिग्रहाभिलाषं कथयेदभिज्ञा॥[1]

यहाँ श्लेष अलंकार का आश्रय लेते हुए श्रीहर्ष ने दमयन्ती युक्त द्विज सम्बोधन का प्रयोग नल सन्देश वाहक पक्षी हंस के रूप में किया है। अर्थात् कौन स्त्री चन्द्ररूपी राजा नल से पाणिग्रहण की अभिलाषा करेगी, इसके अनुसार द्विजराज रूपी चन्द्र को प्राप्त करने की अभिलाषा प्राप्त की है। यहाँ ज्योतिषशास्त्र प्रसिद्ध चन्द्र के द्विजत्व को व्यक्त किया। अर्थात् जिस प्रकार ज्योतिषशास्त्र में सूर्य के समीप सभी ग्रहों के बल व तेज में न्यूनता आ जाती है। उसी प्रकार काम-बाण-सर्पद्रष्टा दमयन्ती अन्य व्यक्तियों को करुणा जलाशय में निमग्न कर रही है। यहाँ ज्योतिषशास्त्र प्रसिद्ध चन्द्रमा के 'द्विजराज' इस नाम का आश्रय लेकर दमयन्ती की मनोभिलाषा को प्रस्तुत किया है। ज्योतिष के अष्टक वर्ग का सिद्धान्त भी महाकाव्य में यत्र-तत्र प्रयुक्त है-

शुभाष्टवर्गस्त्ववनङ्गजन्मनस्तवाधरेऽलिख्यत यत्र लेखया।
मदीयदन्तक्षयराजिरञ्जनैः स भूर्जतामर्जतु बिम्पाटलः॥[2]

अर्थात् ज्योतिषशास्त्र में जन्म-पत्रिका निर्माण करते समय ज्योतिषी द्वारा-जन्मकालीन शुभाष्टक वर्ग को बनाया जाता है। इसमें रेखाओं का रहना शुभ व बिन्दुओं का रहना अशुभ माना जाता है। यहाँ दमयन्ती के अधर में जिस अष्टकवर्ग की रेखायें विद्यमान हैं, वह शुभ सूचक रूप में वर्णित है। ज्योतिषशास्त्र में उद्धृत रेखा-अष्टक विचार को मानसागरी में इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

वर्तते रविरेखा च शत्रूणाञ्च पराजयम्।
सहसा सिद्धिरेवाऽत्र भावजे समुपस्थिता॥
ददाति शशिरेखा च वस्त्राभरणभूषणम्।
लभते प्रभुसम्मानं कर्मप्राप्तिमिवाऽम्बरम्॥
ददाति भौमजा रेखा अर्थप्राप्तिं सदैव हि।
आरोग्यमायुर्वृद्धिञ्च कार्यकान्तिं प्रदापयेत्॥
बुधस्य रेखया सौख्यं मिष्टान्नं लभते सदा।
दानधर्मरतश्चैव द्विजदेवाग्निपूजकः॥
रेखा जैवी जनयति सद्वा चित्तसौख्यादिपुष्टिम्।
जायाभोगं जनयतितरां शत्रुहन्ती च नित्यम्।

1. नैषधीयचरितम्, 3/59
2. नैषधीयचरितम्, 9/119

मानोत्साही विभवमतुलं वस्त्रहेमादिवृद्धम्।
प्राप्य सौख्यं सकलमतुलं बन्धुवर्गोपहारम्॥
चिन्तु: कष्टं विगलधनधीर्मानसे चित्तचिन्ताम्।
मार्गे भंग जनयति सदा पातनं वाहनाद्वा।
लोकाविष्टं भवति कलहं वाङ्मयेनाऽपमानम्।
शत्रुद्वेषं व्ययमपि सदा साहसात्कार्यहानि:॥
सौरी रेखा जनयति फलं भृत्यहेत्वर्थसम्पत्।
कार्ये सिद्धिं नृपतिसचिवं साधुसम्पर्कदात्री।
भूमिप्राप्तिं कितवजयिता स्नानदानार्चनेषु।
मिष्टान्नं स्यान्नृपतिवरतं धान्यसस्येषु वृद्धि:॥[1]

कवि ने प्रतिपदा व अमावस्या के निन्दित चन्द्र को भी महाकाव्य में स्थान दिया है। काव्यस्रष्टा द्वारा नल दमयन्ती विवाह श्रेष्ठ मुहूर्तों की बेला में कराया गया है-

निरीय भूपेन निरीक्षिताननां शशंस मौहूर्तिकसंसदंशकम्।
गुणैररीणैकृदयास्तनिस्तुषं तदा स दातुं तनयां प्रचक्रमे॥[2]

यहाँ दमयन्ती के पिता महाराज भीम ने अपनी पुत्री दमयन्ती के लिए ज्योतिषशास्त्रोक्त प्रशस्त मुहूर्त निकलवाया। इस प्रकार ज्योतिषियों का अनुकरण करते हुए राजा भीम ने दमयन्ती का विवाह शुक्र व गुरू के उदयास्तमय दोषों से रहित मुहूर्त में किया। ज्योतिषशास्त्र में विवाह मुहूर्त विचार विषयक वर्णन को मुहूर्तचिन्तामणिकार ने इस प्रकार से प्रकाशित किया है-

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्या:।
तस्माद्विवाहसमय: परिचिन्त्यते हि
तन्निघ्नतामुपगता: सुतशीलधर्मा:॥[3]

इस प्रकार शुभ मुहूर्त में विवाह सम्पादन करने से कन्या सौभाग्य समृद्धि को प्राप्त करती है। इसी बेला में जो राजा असफल हुए उनकी यात्रा के आरंभ में धूमकेतु को प्रदर्शित किया है-

बालेऽधराधरितनैकविधप्रवाले!
पाणौ जगाद्विजयकार्मणमस्य पश्य।

---

1. मानसागरी पृ०-388-391
2. नैषधीयचरितम्, 15/8
3. मुहूर्तचि०-विवाहप्र०-1

ज्याघातजेन रिपुराजकधूमकेतु-
तारायमाणमुपरज्य मणिं किणेन॥[1]

अतः सिद्ध हुआ कि धूमकेतु का दर्शन अशुभ है। कवि ने काव्य नायक के जीवन को विशिष्टता प्रदान करने हेतु दुरुधरा आदि योगों की चर्चा भी की है-

अवावि भैमि परिधाप्य कुण्डले वयस्य याम्यामभितः समन्वयः।
त्वदाननेन्दोः प्रियकामजन्मनि श्रयत्ययं दौरुधरीं धुरं ध्रुवम्॥[2]

इस ज्योतिषशास्त्रोक्त वचन को उद्धृत कर गुरु तथा शुक्र के मध्य में चन्द्रमा की स्थिति होने पर उक्त दुरुधरा योग होने का प्रतिपादन किया है। दुरुधरा योग का फल ज्योतिषशास्त्रीय ग्रन्थों में इस प्रकार से वर्णित है, जिसका जन्म 'दुरुधरा योग' में हो, वह धनवान, सुखी, हाथी घोड़ों से युक्त शत्रुहन्ता तथा स्त्री के अनुकूल रहता है-

सद्वित्तसद्वारणवाहधात्री सौख्याभियुक्तः सततंहतारिः।
कान्तासुनेत्रऽचललालसः स्याद्योगे सदा दौरुधरे मनुष्यः॥[3]

साथ ही समय समय पर ऋतु वर्णन, सन्ध्या वर्णन, प्रदोष व रात्रिवर्णन द्वारा ज्योतिषशास्त्रीय ज्ञान की परिपक्वता का परिचय भी दिया है। नैषधकार श्रीहर्ष ने महाकाव्य में सामुद्रिकशास्त्र के तथ्यों का वर्णन कर लोकजीवन में इसकी चरितार्थता एवं प्रासगिकता पर अपनी मुहर लगायी है। सामुद्रिकशास्त्र के ज्ञान के माध्यम से पुरुष एवं स्त्री दोनों के शरीराकृतियों की विशेषताओं एवं उससे उनके व्यक्तित्व का आकलन किया जा सकता है। इसी सामुद्रिकशास्त्री ज्ञान का आश्रय लेते हुए महाकवि श्रीहर्ष ने विविध प्रसगों में विविध स्त्रियों यथा-दमयन्ती, सरस्वती इत्यादि उनकी सखियों के शरीराकृतियों की चर्चा की है। ग्रन्थ के आरम्भ में सामुद्रिक विद्या सम्बद्ध विशेषज्ञता को प्रकाशित करते हुए श्रीहर्ष ने काव्य नायक नल के शरीर का आनख-शिख-वर्णन महाकाव्य में किया है। नल के चरणों में ऊर्ध्व रेखा, हाथों का कमल सदृश वर्णन तथा उनमें चक्रवर्ती के चिह्न, केश कलाप व मुख सौन्दर्य वर्णन में पग-पग पर सामुद्रिकशास्त्रानुसार वर्णन प्रस्तुत किया है-

अधोविधानात्कमलप्रवालयोः
शिरःसु दानादखिलक्ष्माभुजाम्।
पुरेदमूर्ध्वं भवतीति वेधसा
पदं किमस्याङ्कितमूर्ध्वरेखया॥[4]

---

1. नैषधीयचरितम्, 11/104
2. नैषधीयचरितम्, 11/42
3. सुगमज्योतिष पृ०-451
4. नैषधीयचरितम्, 1/18

अर्थात् जिस व्यक्ति के चरणों में ऊर्ध्व रेखा का चिह्न होता है सामुद्रिकशास्त्रानुसार वह सर्वोत्कृष्ट (उच्च) पद को प्राप्त करता है। राजा नल के चरणों में भी उक्त गुण प्राप्त होते हैं। सामुद्रिकशास्त्र में पादोर्ध्व रेखा के विषय में कहा गया कि जिस व्यक्ति का पादतल चलने से भी कोमलता का परित्याग नहीं करता है तथा जिसमें पूर्ण स्पष्ट ऊर्ध्व रेखा होती है, वह पुरूष सम्पूर्ण विश्व का राजा होता है-

पादचरस्यापि चरणतलं यस्य कोमलं तत्र।
पूर्णस्फुटोर्ध्वरेखा स भवेद् विश्वम्भराधीशः॥[1]

श्रीहर्ष ने राजा नल के मुख सौन्दर्य की चर्चा शरत्कालीन पूर्णिमा के चन्द्र से व हाथ की नवपल्लव से तथा उनके चरण की कमल से की है-

स्वकेलिलेशस्मितनिन्दितेन्दुनो निजांशदृक्तर्जितपद्मसम्पदः।
अतद्द्वयीजित्वरसुन्दरान्तरे न तन्मुखस्य प्रतिमा चराचरे॥
सरोरुहं तस्य दृशैव निर्जितं जिताः स्मितेनैव विधोरपि श्रियः।
कुतः परं भव्यमहो महीयसी तदाननस्योपमितौ दरिद्रता॥[2]

बृहत्संहिता में मुखादि सौन्दर्य को इस प्रकार प्रकाशित किया है-

स्त्रीमुखमनपत्यानां शाठ्यवतां मण्डलं परिज्ञेयम्।
दीर्घं निर्द्रव्याणां भीरुमुखाः पापकर्माणः॥
चतुरस्रं धूर्त्तानां निम्नं वक्रञ्च तनयरहितानाम्।
कृपणानामतिह्रस्वं सम्पूर्णं भोगिनां कान्तम्॥[3]

राजा नल के केशों का वैशिष्ट्य महाकवि श्रीहर्ष ने निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया-

स्वबालभारस्य तदुत्तमाङ्गजैः
समं चमर्येव तुलाभिलाषिणः।
अनागसे शंसति बालचापलं
पुनः पुनः पुच्छविलोलनच्छलात्॥[4]

इस पद्य में राजा नल के केश सौन्दर्य को चमरी गाय के केश समूह से भी सुन्दर रूप में वर्णित किया है। आचार्य वराहमिहिर ने केशों के वैशिष्ट्य को पुरुष प्रकृति रूप में वर्णित किया है-

एकैकभवैः स्निग्धैः कृष्णैराकुञ्चितैरभिन्नाग्रैः।
मृदुभिर्न चातिबहुभिः केशैः सुखभाग्नरेन्द्रो वा॥

1. सामुद्रिकशास्त्र पृ०-4 श्लो०-2
2. नैषधीयचरितम्, 1/23-24
3. बृहत्संहिता पृ०-427
4. नैषधीयचरितम्, 1/25

बहुमूलविषमकपिलाः स्थूलस्फुटिताग्रपरुषह्रस्वाश्च।
अतिकुटिलाश्चातिघनाश्च मूर्धजा वित्तहीनानाम्॥[1]

कहीं केश कलापों को चमरी मृगसदृश, कहीं कमलनयन मुख में दन्तमयी बत्तीस रेखा[2], कराग्र भाग में विद्यमान दश शंखाकृतियाँ चक्रवर्तित्व के लक्षण को सूचित करते हैं जो कि सामुद्रिकशास्त्रानुसार चक्रवर्ती राजा में ही प्राप्त होते हैं।

इसी प्रसंग में नायिका के सौन्दर्य को भी कभी कमल को जीतने वाला कभी चन्द्र को जीतने वाला[3] बताकर श्रेष्ठ नायिका के रूप में प्रदर्शित किया है।

कवि ने नायिका को मृगनयनी[4], अधरबिम्बफलानुकारी[5], धनुषाकारभ्रुयुगल[6], नासिका की उन्नतता[7], कलशाकारस्तनयुग्मशोभा, मयुरपुच्छसदृश केशपाश, उदर में त्रिवली[8], वर्तुलाकार व विशालनिलम्ब[9], मृणालदण्डतुल्यबाहु[10], स्वरसौन्दर्य[11], कम्बु-आकृति का कण्ठ[12], हरिद्रानुकारीदेहकान्ति, दन्तपंक्तिसौन्दर्य, मृदुवाणी, मनोहरस्वर, आवर्तयुक्तश्रोत्र, आवर्तानुकारीनाभि, कमलाटि करयुगल, पीपल पत्रानुकारी योनि[13], कमल जित पादयुगलों की शोभा का वर्णन किया है-

भुवनत्रयसुभ्रुवामसौ दमयन्ती कमनीयतामदम्।
उदियाय यतस्तनुश्रिया दमयन्तीति ततोऽभिधां दधौ॥[14]

अतः महाकाव्य में कवि द्वारा दमयन्ती को उत्तम नायिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत साहित्य के महाकाव्यों में शकुनों का पर्याप्त उल्लेख मिलता है। उसमें भी महाकवि श्रीहर्ष द्वारा विरचित नैषधीयचरितम् महाकाव्य में यात्रादि प्रसंग व स्वप्नादि विषयक प्रसंगों में बहुधा रूप में मिलता है। महाकाव्य में कवि ने समय-समय पर स्वप्न विचार का भी यथोचित प्रयोग किया है। जैसा कि कवि ने

---

1. बृहत्संहिता पुरुषलक्षण, 82/83
2. नैषधीयचरितम्, 3/35
3. नैषधीयचरितम्, 2/19
4. नैषधीयचरितम्, 2/21-22
5. नैषधीयचरितम्, 2/24
6. नैषधीयचरितम्, 2/28
7. नैषधीयचरितम्, 2/29
8. नैषधीयचरितम्, 2/34-35
9. नैषधीयचरितम्, 2/36
10. नैषधीयचरितम्, 4/36
11. नैषधीयचरितम्, 6/58
12. नैषधीयचरितम्, 7/67
13. नैषधीयचरितम्, 7/90
14. नैषधीयचरितम्, 2/18

पूर्व में नायक (नल को) स्वप्न में नायिका के दर्शन कराये बाद में यथार्थ रूप से नायक को नायिका की प्राप्ति हुई। इस घटना ने सिद्ध किया कि स्वप्न कभी व्यर्थ नहीं होते हैं-

न का निशि स्वप्नगतं ददर्श तं
जगाद गोत्रस्खलिते च का न तम्।
तदात्मताध्यातधवा रते च का
चकार वा न स्वमनोभवोद्भवम्॥
मनोरथेन स्वपतीकृतं नलं निशि क्व सा न स्वपति स्म पश्यति।
अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोति सुप्तिर्जनदर्शनाऽतिथिम्॥
निमीलितादक्षियुगाच्च निद्रया हृतोऽपिबाह्येन्द्रियमौनमुद्रितात्।
अदर्शि संगोप्य कदाऽप्यवीक्षितो रहस्यमस्याः स महन्महीपतिः॥[1]

श्रीहर्ष कहते हैं कि स्वप्न में पूर्व नहीं देखे गये पदार्थ को भी पूर्वजन्म की भावना से मनुष्य को दिखला देता है। दमयन्ती भी राजा नल को स्वप्न में दिखती थी एवं बाद में नल दमयन्ती को पति के रूप में प्राप्त भी हुए। ज्योतिषशास्त्र में स्त्रियों के मन में उत्पन्न होने वाली पुरुष विशेष विषयक कामना के विशिष्ट प्रभाव को प्रकाशित किया है-

जात्यं मनोभवसुखं सुभगस्य सर्व-
माभासमात्रमितरस्य मनोवियोगात्।
चित्तेन भावयति दूरगतापि यं स्त्री
गर्भं बिभर्ति सदृशं पुरुषस्य तस्य॥[2]

इसी प्रकार कभी धूमकेतु दर्शन, कभी धूम्रवर्णीय राहुदर्शन अपशकुन के रूप में प्रस्तुत किया है जिससे कथानायक का जीवन संघर्ष पूर्ण हो गया-

मुनिद्रुमः कोरकितः शितिद्युतिर्वनेऽमुनाऽमन्यत सिंहिकासुतः।
तमिस्रपक्षत्रुटिकूटभक्षितं कलाकलापं किल वैधवं वमन्॥[3]

इसी प्रकार महाकवि श्रीहर्ष ने शकुनशास्त्रीय सिद्धान्तों का आश्रय लेते हुए शरीरांग स्पन्दन से भी शुभाशुभ फल का विवेचन किया है-

स्विद्यत्प्रमोदाश्रुलवेन वामं रोमांचभृत्पक्ष्मभिरस्य चक्षुः।
अन्यत्पुनः कम्प्रमपि स्फुरन्तं तस्याः पुरः प्राप नवोपभोगम्॥

यहाँ राजा नल जब देवदूत बनकर कुण्डिनपुरी में प्रवेश कर रहे थे, तब उनकी रोमराजि पुलकित हो रही थी एवं दक्षिण नेत्र फड़क रहा था। ज्योतिषशास्त्रीय

1. नैषधीयचरितम्, 1/30,39,40
2. बृहत्संहिता सौभाग्य०अ०-1
3. नैषधीयचरितम्, 1/96

ग्रन्थों में पुरुषों के दाहिने अंग एवं स्त्रियों के बाँये अंग स्पन्दन को शुभ एवं इसके विपरीत फड़कने को अशुभ माना गया है। सन्दर्भगत टीका करते हुए नारायण महोदय का कथन इस प्रकार से है-**'चलत्वं नयनस्य यद्यपि स्वभावतो विद्यते तथापि प्रियाप्राप्तिसूचकत्वादित्यस्य सार्थक्यम्। अन्यस्यापि स्वामिनो नवोपभोगे स्वेदादयः सात्त्विकाः भावाः प्रभवन्ति। दक्षिणनयनस्फुरणं भैमीलाभसूचकं शकुनं कथितम्'**। यात्र या किसी कार्य की फल सिद्धि के विचार के मन में आने पर यदि पुरुषों का दाहिना अंग एवं स्त्रियों का बायाँ अंग स्पन्दन करे तो इसे शकुनशास्त्रियों ने कार्य सिद्धि सूचक माना है। इस सन्दर्भ में समुद्राचार्यों ने इसे इस प्रकार कहा है **'वामभागस्तु नारीणां पुंसां श्रेष्ठस्तु दक्षिणम्'**। इस सन्दर्भ में गर्गाचार्य का मत इस प्रकार है-

दक्षिणचक्षुः स्पन्दनं बन्धुदर्शनमर्थलाभं वा।
वामचक्षुः स्पन्दनं बन्धुविच्छेदः धनं हानिं वा।।
स्त्रीणामेतत्फलमविकलं दक्षिणे वैपरीत्यम्।
स्त्रीणां च वामावयवे प्रजातः स्पन्दः फलानि प्रदिशत्यवश्यम्।।

शकुनविदों द्वारा अनुभवगम्य है कि किसी व्यक्ति से मिलते समय यदि शुभ शकुन हों, तो वह मिलने वाला मनुष्य भी शुभ कारक होता है। सन्दर्भगत टीका करते हुए नारायणशास्त्री ने भी इसका समर्थन करते हुए कहा है कि शकुन स्वरों में काक स्वर के साथ-साथ पुरुष की दाहिनी नासिका एवं दाहिनी आँख का स्पन्दन भी शुभ सूचक होता है-

'तत्कालवेद्यैः तदागमज्ञेयैः शकुनस्वराद्यैः काकस्वरादिशकुननासिकास्वर दक्षिणचक्षुः स्पन्दाद्यैः कृत्वा तां देवीमाप्तामभीष्टाम् प्राप्तां प्रतीत्य ज्ञात्वा, आप्तागमनसमये भुजस्पन्दादयो भवन्तिय्'। महाकवि श्रीहर्ष ने विभिन्न राजाओं के विषय में क्रमशः विवेचन किया है वहाँ दमयन्ती स्वयंवर में कर्कोटक आदि नागों की उपस्थिति को अनुकूल शुभ सूचक रूप में प्रस्तुत किया है-

तद्दर्शिभिः स्वरणे फणिभिर्निराशै-
र्निःश्वस्य तत्किमपि सृष्टमनात्मनीनम्।
यत्तान्प्रयातुमनसोऽपि विमानवाहा
हा हा प्रतीपपवनाऽशकुनात्र जग्मुः।।[1]

शकुनशास्त्रीय ग्रन्थों में प्रतिकूल वायु का चलना भी अपशकुन का द्योतक समझा जाता है। महाकवि श्रीहर्ष ने इसी तथ्य का प्रतिपादन करते हुए दमयन्ती स्वयंवर प्रसंग में कहा है कि सर्पराज वासुकि के पास, दमयन्ती के विमानवाहक चाहते हुए भी प्रतिकूल पवन (निराश सर्पों की लम्बी श्वांसें) को अशुभ समझकर

1. नैषधीयचरितम्, 11/22

उनके पास नहीं गये। महाकवि श्रीहर्ष ने कीकट नरेश के प्रसंग में दिग्दाह, भस्मवृष्टि, भूकम्प, रक्तवृष्टि आदि लक्षणों को अपशकुन रूप में प्रयुक्त किया है-

इसी प्रकार महाकाव्य में स्थान-स्थान पर वापि तट पर पिकादि गीतों की चर्चा, मयूरों का नृत्य[1], शीतलमन्द सुगन्ध पवन[2], कलहंस दर्शन[3], जलपूर्ण घट, फलों से पूर्ण आम्रवृक्ष[4], गजदर्शन, चन्द्रमण्डल का शुभ दर्शन, मन की प्रसन्नता, दक्षिण नेत्र, दक्षिण अंग स्पन्द, स्त्रियों का वाम अंग स्पन्द, कुलदेवता का स्मरण[5], पद्म, शंखादि पदार्थ का दर्शन, दर्पण देखना, लाजा गिरना, फल-फूलों का दर्शन, पद्म, शंखादि का दर्शन, शुभ शकुन के रूप में वर्णित हैं-

अजानती काऽपि विलोकनोत्सुका
समीरधूताऽर्द्धमपि स्तनांशुकम्।
कुचेन तस्मै चलतेऽकरोत्पुरः
पुरांग्ना मंगलकुम्भसम्भृतिम्॥
सखीं नलं दर्शयमानयाङ्कृतो
जवादुदस्तस्य करस्य कंकणे।
विषज्य हारेस्त्रुटितैरतार्कितैः
कृतं कयाऽपि क्षणलाजमोक्षणम्॥
लसन्नखादर्शमुखाम्बुजस्मित-
प्रसूनवाणीमधुपाणिपल्लवम्।
यियासतस्तस्य नृपस्य जज्ञिरे
प्रशस्तवस्तूनि तदेव यौवतम्॥[6]

इस प्रकार उपर्युक्त विवरणों में वर्णित प्रसंगों से यह प्रतिपादित होता है कि महाकवि श्रीहर्ष ज्योतिषशास्त्रीय, सामुद्रिकशास्त्रीय के साथ ही शकुनशास्त्रविद् भी थे।

निष्कर्षः- नैषधीयचरितम् महाकाव्य का ज्योतिषशास्त्रीय वैशिष्ट्य से अवलोकन करते हुए काव्य में ज्योतिषशास्त्र संबद्ध, सूर्यादि ग्रहों की स्थिति, विभिन्न ग्रह नक्षत्रों द्वारा निर्मित योगों का विचार विशद रूप में है। साथ ही विभिन्न प्रसगों में अन्य ज्योतिषशास्त्रीय तत्त्वों का वर्णन तथा उनके शारीरिक अंगों की शोभा को सामुद्रिक सिद्धान्तानुगत करते हुए उनके साथ घटित होने वाली अनेकानेक शुभाशुभ घटनाओं

1. नैषधीयचरितम्, 1/102
2. नैषधीयचरितम्, 1/106
3. नैषधीयचरितम्, 1/117
4. नैषधीयचरितम्, 2/66
5. नैषधीयचरितम्, 10/69
6. नैषधीयचरितम्, 15/74,76

को शकुनशास्त्रानुगत वर्णित कर महाकवि श्रीहर्ष ने अपनी प्रतिभा से कुशल ज्योतिषशास्त्रज्ञता का परिचय दिया है।

सहायक-सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची:-

1. नैषधीयचरितम्, श्रीहर्ष, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, सन्-1973
2. नैषधीयचरितम्, 'जीवातु टीका' मल्लिनाथ, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, तृतीय संस्करण, सन्-2010
3. नैषधीयचरितम्, 'नारायणीटीका', श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, खेतावाड़ी-07, सम्वत्, 1984
4. भारतीय ज्योतिष, डॉ० नेमीचन्द्र शास्त्री, उत्तरप्रदेश प्रकाशन, लखनऊ, सन्-1976
5. बृहद्दैवरंजनम्, ज्योतिर्विद् गयादत्त आत्मज पं० रामदीन खेमराज, श्री कृष्णदास प्रकाशन, बम्बई, सन्- 1994
6. मानसागरी, 'जयन्ती टीका' विजयकान्त शास्त्री, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, सन्-2003
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्या प्रकाशन, वाराणसी, सन्- 2012
8. बृहत्संहिता, वराहमिहिर, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, सन्-1997
9. सामुद्रिक रहस्य, डॉ० शुकदेव चतुर्वेदी, प्राच्य प्रकाशन, जगत् गञ्ज, वाराणसी, सन्-1985
10. सामुद्रिक रहस्य, पं० श्री कालिकाप्रसाद शर्मा, ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, वाराणसी, सन्-2010
11. सामुद्रिक रहस्य, डॉ० देवीप्रसाद त्रिपाठी, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी, सन्-2001
12. सारावली, श्रीकल्याण वर्मा, व्या० मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, सन्-1988
13. मुहूर्तचिन्तामणि, रामदैवज्ञ, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 2001
14. मुहूर्तचिन्तामणि, 'पीयूषधारा टीका' गोविन्द, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, सन्-2001
15. भद्रबाहुसंहिता, डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सन्-2013

◆◆◆